CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

अंतरविषयक दृष्टिकोण और सतत विकास के लिए रणनीतियाँ

मनोज प्रधान
पीएच.डी. शोधार्थी
डॉ. संजय यादव
प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा व योग विभाग
श्याम विश्वविद्यालय, दौंसा
Email: mnjpradhan4@gmail.com, Mobile.: 9887409080

First draft received: 02.05.2024, Reviewed: 10.05.2024, Final proof received: 19.06.2024, Accepted: 28.06.2024

सारांश

सतत विकास के लिए शिक्षा (Education for Sustainable Development - ESD) एक ऐसा शिक्षा दृष्टिकोण है जो एक सतत भविष्य निर्मित करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, मूल्यों और दृष्टिकोणों के विकास पर जोर देता है। ESD का उद्देश्य शिक्षार्थियों को सशक्त बनाना है ताकि वे क्रियाएं कर सकें और ऐसे निर्णय ले सकें जो सततता को बढ़ावा दें और जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि, और सामाजिक असमानता जैसी दबावपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर सकें। ESD विभिन्न विषयों, अनुशासनों और शैक्षणिक स्तरों में सततता विषयों को एकीकृत करता है, जो शुरुआती बचपन की शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और उससे आगे तक फैला हुआ है। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, और नवाचार को बढ़ावा देना, और आजीवन शिक्षा को प्रोत्साहित करना है।

ESD की नींव इस समझ पर आधारित है कि शिक्षा व्यक्तिगत और सामूहिक क्रियाओं को आकार देने में और सततता की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसमें पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक मुद्दों के बीच की अंतर्संबंधितता को पहचाना गया है और उन्हें संबोधित करने के लिए अंतरविषयक और सहयोगात्मक दृष्टिकोणों की आवश्यकता को महसूस किया गया है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पहलों और ढांचों द्वारा ESD का समर्थन किया गया है, जिसमें सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक (2005-2014) और 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाए गए सतत विकास लक्ष्य (SDGs) शामिल हैं। यह लेख विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) पर केंद्रित होगा, विशेषकर SDG 4, जो समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करता है। लेखक ने सतत विकास और शिक्षा के आसपास के पहलुओं पर मौजूदा साहित्य की समीक्षा की, अपने अनुभवों को पत्र में साझा किया, वर्तमान सिद्धांतों/मॉडलों का उल्लेख किया और विद्यालयों द्वारा सामना की गई चुनौतियों तथा विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जा सकने वाली सर्वोत्तम प्रथाओं का उल्लेख किया। सतत विकास के लिए शिक्षा को अपनाना चाहिए।

मुख्य-शब्द : *सतत विकास, सतत विकास लक्ष्य, स्कूली शिक्षा, सतत भविष्य इत्यादि.*

प्रस्तावना

सतत विकास के लिए शिक्षा)ESD) एक सीखने की प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाना है ताकि वे पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक सततता के लिए सूचित निर्णय ले सकें और जिम्मेदारीपूर्ण कार्रवाई कर सकें। यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय कारकों के बीच अंतर्संबंधों पर विचार करता है और यह मान्यता देता है कि सतत विकास के लिए इन तीन स्तंभों का एकीकरण आवश्यक है।

ESD का लक्ष्य व्यक्तियों को सतत विकास की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और मूल्य

प्रदान करना है। इसमें प्राकृतिक दुनिया की अंतर्संबद्धता को समझना, मानवीय गतिविधियों का पर्यावरण पर प्रभाव पहचानना, और नकारात्मक प्रभावों को कम करने और सकारात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना शामिल है।

सतत विकास के लिए शिक्षा)ESD) महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सततता की संस्कृति को बढ़ावा देकर एक अधिक सतत भविष्य बनाने में मदद कर सकती है। सतत प्रथाओं और मूल्यों को बढ़ावा देकर, ESD व्यक्तियों और समुदायों को सतत व्यवहार अपनाने और सतत विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। कुल मिलाकर, ESD सतत विकास को बढ़ावा देने और एक अधिक सतत भविष्य बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और मूल्यों के साथ व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाकर सभी के लिए एक अधिक समान और सतत दुनिया बनाने में मदद कर सकता है।

पर्यावरणीय सततता प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक आवश्यक उपकरण है। बिना शिक्षा के किसी भी स्तर पर सतत विकास संभव नहीं है। आर्थिक प्रवृत्तियों और मानव के उपभोग पैटर्न में बढ़ती हुई सतत भविष्य के लिए दृष्टि की कमी स्पष्ट है। और इस चुनौती का सामना करने के लिए जागरूकता, ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है, और यह शिक्षा के उपकरण के रूप में किया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में सतत विकास लक्ष्यों की घोषणा की, जिसमें दुनिया भर के देशों ने भाग लिया और वैश्विक लक्ष्यों के लिए हस्ताक्षर किए। तब से, यह प्रश्न हर किसी के मन में है कि ये बहुत ही महत्वाकांक्षी वैश्विक लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं या वास्तविक हैं। सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों की 2000 से 2015 के वर्षों में घोषणा की गई थी जिसने बहुत कुछ हासिल किया। लेकिन, सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों की विफलता में योगदान देने वाली कई खामियां थीं। और फिर SDGs की घोषणा की गई, जिसने दुनिया को 17 लक्ष्य और 169 उद्देश्य दिए और इसे एजेंडा 2030 कहा, जिसका आदर्श वाक्य 'किसी को पीछे न छोड़ना' है। और इसलिए, सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के क्रियान्वयन के दौरान की गई गलतियों को दोहराना और भी महत्वपूर्ण है। हम सभी को उन गलतियों से सीखना होगा और SDGs के क्रियान्वयन के दौरान MDGs की सफलता का अनुकरण करना होगा। और स्पष्ट रूप से पहचानी गई गलतियों में से एक यह है कि सततता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा का उपयोग नहीं कर पाना है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सतत विकास लक्ष्य 4:

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG 4) का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह लक्ष्य समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और सभी के लिए जीवन भर सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है। SDG 4 शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानता है, जो सतत समाजों और अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण करने में सहायक है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सतत विकास के लिए अनिवार्य है क्योंकि यह व्यक्तियों को आज की दुनिया में सामना करने वाली आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्तियों को सूचित निर्णय लेने और एक सतत भविष्य बनाने के लिए कार्रवाई करने में मदद कर सकती है। लक्ष्य 4 के अंतर्गत निम्नलिखित लक्ष्य शामिल हैं:

1. सुनिश्चित करना कि सभी लड़कियों और लड़कों को मुफ्त, गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा तक पहुंच हो।
2. उन वयस्कों की संख्या बढ़ाना जिन्हें शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों तक पहुंच प्राप्त है।
3. शिक्षा में लिंग असमानताओं को समाप्त करना और सभी के लिए शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करना।
4. प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों, प्रासंगिक और समावेशी पाठ्यक्रमों, और सुरक्षित और सहायक सीखने के वातावरण प्रदान करके शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।
5. उन लोगों की संख्या बढ़ाना जिनके पास सतत विकास के लिए आवश्यक कौशल है, जिसमें साक्षरता, अंकगणितीय कौशल और डिजिटल साक्षरता शामिल है।

लक्ष्य 4 को प्राप्त करने के लिए सरकारों, नागरिक समाज संगठनों, और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग आवश्यक है ताकि संसाधनों को संगठित किया जा सके, शिक्षा प्रणालियों में सुधार किया जा सके, और यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी सीखने वालों को वे अवसर प्राप्त हों जो उन्हें सफल होने के लिए आवश्यक हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में निवेश करके, हम सभी के लिए एक अधिक सतत भविष्य बना सकते हैं।

संक्षेप में, सतत विकास लक्ष्यों का लक्ष्य 4 शिक्षा की मौलिक भूमिका को पहचानता है जो सतत विकास प्राप्त करने में सहायक है और यह सभी के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता को उजागर करता है।

शिक्षा और सततता के बीच का संबंध

शिक्षा और सततता घनिष्ठ रूप से आपस में जुड़े हुए हैं, और एक सतत भविष्य उस शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार पर निर्भर करता है जो सतत विकास को बढ़ावा देती है। शिक्षा जागरूकता बढ़ाने, महत्वपूर्ण सोच और समस्या सुलझाने की क्षमता विकसित करने, और जिम्मेदार और नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर एक अधिक सतत विश्व बनाने में सहायक है।

यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे शिक्षा और सततता आपस में जुड़ी हुई हैं:

1. **शिक्षा सततता साक्षरता को बढ़ावा देती है**
   शिक्षा शिक्षार्थियों को सामाजिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय प्रणालियों की अंतर्संबंधिता को समझने के लिए आवश्यक

ज्ञान, कौशल, और दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह व्यक्तियों को हमारी दुनिया के सामने आने वाली जटिल चुनौतियों को समझने में मदद करती है और उन्हें इन चुनौतियों का समाधान सतत तरीके से करने के लिए उपकरण प्रदान करती है।

2. **शिक्षा सतत व्यवहार को बढ़ावा देती है**
   शिक्षा व्यक्तियों के मूल्यों और दृष्टिकोणों को आकार दे सकती है, जिससे उनके व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है और वे सतत जीवनशैली की ओर अग्रसर होते हैं। यह व्यक्तियों को उनके क्रियाओं के पर्यावरण, समाज, और अर्थव्यवस्था पर प्रभावों को समझने में मदद करती है और उन्हें सततता का समर्थन करने वाले निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है।
3. **शिक्षा सतत विकास का समर्थन करती है**
   सतत विकास को बहु-विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, और शिक्षा जटिल समस्याओं का सतत तरीके से समाधान करने में सक्षम कार्यबल बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा व्यक्तियों को अक्षय ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकी, और सतत कृषि जैसे क्षेत्रों में कौशल और ज्ञान प्रदान कर सकती है, जो सतत विकास के लिए अनिवार्य हैं।
4. **शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा देती है**
   शिक्षा पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाकर, प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग की शिक्षा देकर, और संरक्षण प्रथाओं को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय संरक्षण को प्रोत्साहित कर सकती है। शिक्षा व्यक्तियों को पर्यावरण की रक्षा के लिए जिम्मेदारी लेने और एक अधिक सतत विश्व बनाने के लिए सशक्त बना सकती है।

संक्षेप में, शिक्षा सततता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सततता साक्षरता को बढ़ावा देती है, सतत व्यवहार को बढ़ावा देती है, सतत विकास का समर्थन करती है, और पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा में सतत विकास

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति)NEP) 2020 सतत विकास के लिए शिक्षा के महत्व को महत्व देती है और शिक्षा के सभी स्तरों में सततता सिद्धांतों को एकीकृत करने की आवश्यकता को पहचानती है। NEP सतत विकास को शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में पहचानती है और शिक्षा में सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए कई प्रावधान शामिल करती है। यहां NEP 2020 द्वारा शिक्षा में सतत विकास को बढ़ावा देने के कुछ तरीके दिए गए हैं:

1. **पर्यावरणीय शिक्षा का एकीकरण**
   NEP प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक की सभी शिक्षा स्तरों में पर्यावरणीय शिक्षा को एकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर देती है। इसमें पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करना, सतत व्यवहार को बढ़ावा देना, और सतत विकास के लिए आवश्यक कौशल विकसित करना शामिल है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण में सततता का समावे**
   NEP मानती है कि शिक्षक शिक्षा में सतत विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सततता को शामिल करने की आवश्यकता पर जोर देती है।
3. **अनुभवात्मक सीखने का प्रोत्साहन**
   NEP अनुभवात्मक सीखने को बढ़ावा देती है, जो हाथोंहाथ और व्यावहारिक सीखने के अनुभवों को शामिल करती है, ताकि सतत विकास के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित किए जा सकें।
4. **व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान**
   NEP स्थानीय संदर्भ के लिए प्रासंगिक व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करती है जो सतत जीविकाओं को बढ़ावा देते हैं।
5. **सततता के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग**
   NEP प्रौद्योगिकी की क्षमता को पहचानती है जो सतत विकास को बढ़ावा दे सकती है और शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करती है ताकि जागरूकता पैदा की जा सके और सतत व्यवहार को बढ़ावा दिया जा सके।

सारांश में, भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सतत विकास के लिए शिक्षा के महत्व को पहचानती है और इसमें पर्यावरणीय शिक्षा, अनुभवात्मक सीखने, व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, और सततता के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रावधान हैं। शिक्षा के सभी स्तरों में सततता सिद्धांतों को एकीकृत करके, NEP एक अधिक सतत और समावेशी शिक्षा प्रणाली बनाने का लक्ष्य रखती है जो शिक्षार्थियों को सतत विकास के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान, और दृष्टिकोण से सुसज्जित करती है।

भारत में सतत विकास के लिए शिक्षा में बाधाएँ

भारत में सतत विकास के लिए शिक्षा में कई बाधाएँ हैं, जो सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति को रोकती हैं। यहाँ कुछ प्रमुख बाधाएँ दी गई हैं-

1. **जागरूकता की कमी**
   सामान्य जनसंख्या में, जिसमें छात्र, अभिभावक, और शिक्षक शामिल हैं, सतत विकास और इसके सिद्धांतों के बारे में जागरूकता की कमी है। इसके कारण सतत विकास के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना कठिन हो जाता है।
2. **अपर्याप्त ढांचा**
   भारत में कई स्कूल और शैक्षिक संस्थान सतत विकास को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक ढांचे और संसाधनों से वंचित हैं। इसमें अपर्याप्त कक्षा सुविधाएं, पुस्तकालय, और प्रयोगशालाएं शामिल हैं।

3. **अपर्याप्त वित्तपोषण**
   सतत विकास के लिए शिक्षा में कार्यक्रमों को विकसित करने और लागू करने के लिए काफी धनराशि की आवश्यकता होती है, लेकिन भारत में शिक्षा क्षेत्र को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होती। यह स्थिति शिक्षा में सतत विकास पहलों को लागू करने को चुनौतीपूर्ण बना देती है।
4. **शिक्षक प्रशिक्षण में सीमाएँ**
   शिक्षक सतत विकास को शिक्षा में बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन कई शिक्षकों के पास सतत विकास को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और कौशल की कमी होती है।
5. **सामाजिक-आर्थिक असमानताएं**
   भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक असमानताएं हैं जो सतत विकास के लिए शिक्षा तक पहुंच में बाधा डालती हैं। कई वंचित समुदायों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संसाधनों तक पहुंच का अभाव है, जिससे इन क्षेत्रों में सतत विकास को बढ़ावा देना कठिन हो जाता है।
6. **पारंपरिक शिक्षा पर ध्यान**
   भारत की शिक्षा प्रणाली पारंपरिक विषयों जैसे कि गणित, विज्ञान, और भाषा पर भारी रूप से केंद्रित है, जिसमें सतत विकास पर बहुत कम जोर दिया जाता है। इससे पाठ्यक्रम में सतत विकास के सिद्धांतों को एकीकृत करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
7. **परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध**
   विभिन्न हितधारकों, जिनमें नीति निर्माता, शिक्षक, और अभिभावक शामिल हैं, से परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध मिलता है। ये हितधारक पारंपरिक शिक्षा प्रणालियों के अभ्यस्त होते हैं और नई पद्धतियों को लेकर संशयी होते हैं, जिससे शिक्षा में नवीनीकरण और सतत विकास की दिशा में बदलाव लाना कठिन हो जाता है।

सारांश में, भारत में सतत विकास के लिए शिक्षा में बाधाएं जागरूकता की कमी, अपर्याप्त ढांचा, अपर्याप्त वित्तपोषण, सीमित शिक्षक प्रशिक्षण, सामाजिकआर्थिक असमानताएं-, पारंपरिक शिक्षा पर ध्यान, और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध शामिल हैं।

भारत में सतत विकास के लिए शिक्षा (ESD) की चुनौतियों को दूर करने और प्रभावी तरीके से क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं:

1. **सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाएं**
   सार्वजनिक जागरूकता अभियान सतत विकास और इसके सिद्धांतों के बारे में जागरूकता बढ़ा सकते हैं, और सतत विकास के लिए शिक्षा की मांग सृजित कर सकते हैं।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करें**
   शिक्षक शिक्षा में सतत विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें सतत विकास को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और कौशल प्रदान किया जाए।
3. **पर्याप्त वित्त पोषण आवंटित करें**
   सतत विकास के लिए शिक्षा में कार्यक्रमों को विकसित करने और लागू करने के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है, इसलिए शिक्षा में सतत विकास पहलों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त वित्त पोषण आवंटित करना महत्वपूर्ण है।
4. **पाठ्यक्रम में सतत विकास को एकीकृत करें**
   सभी विषयों और कक्षा स्तरों में पाठ्यक्रम में सतत विकास के सिद्धांतों को एकीकृत किया जाना चाहिए, जिसमें परियोजनाखने पर आधारित और अनुभवात्मक सी- विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
5. **ढांचागत समर्थन प्रदान करें**
   सतत विकास के लिए शिक्षा का समर्थन करने के लिए पर्याप्त ढांचा, जैसे कि कक्षाएं, पुस्तकालय, और प्रयोगशालाएं, प्रदान की जानी चाहिए।
6. **हितधारकों की सहभागिता को प्रोत्साहित करें**
   नीति निर्माता, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के सदस्यों को शिक्षा में सतत विकास पहलों के विकास और क्रियान्वयन में संलग्न किया जाना चाहिए, ताकि व्यापक आधारित समर्थन और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके।
7. **साझेदारियां बढ़ावा दें**
   सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र के बीच साझेदारियां संसाधनों और विशेषज्ञता को उपयोग में लाने में मदद कर सकती हैं, जो सतत विकास के लिए शिक्षा का समर्थन करती हैं।
8. **समुदाय की सहभागिता को बढ़ावा दें**
   समुदाय की सहभागिता और शामिल होना ESD कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें ESD कार्यक्रमों की योजना बनाने और क्रियान्वयन में अभिभावकों, स्थानीय समुदाय के नेताओं और अन्य हितधारकों को शामिल करना शामिल है।
9. **वंचित समुदायों पर ध्यान दें**
   वंचित समुदायों, विशेषकर ग्रामीण और हाशिए के समुदायों, पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि सुनिश्चित हो सके कि उन्हें ESD के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच हो।
10. **अनुसंधान को प्रोत्साहित करें**
    ESD के लिए नवीन दृष्टिकोणों का पता लगाने और क्रियान्वयन के लिए प्रभावी प्रथाओं और मॉडलों की पहचान करने के लिए अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सारांश में, भारत में सतत विकास के लिए शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना, शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करना, पर्याप्त

वित्तपोषण आवंटित करना, पाठ्यक्रम में सतत विकास को एकीकृत करना, ढांचागत समर्थन प्रदान करना, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं का समाधान करना, हितधारकों की सहभागिता को प्रोत्साहित करना, और साझेदारियां बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

अंत में, भारत में एक सतत भविष्य बनाने के लिए सतत विकास के लिए शिक्षा (ESD) आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ESD के महत्व को पहचाना है और शिक्षा प्रणाली में इसके एकीकरण के लिए प्रावधान किए हैं। हालांकि, भारत में ESD को बढ़ावा देने में अभी भी कई बाधाएं हैं, जिनमें जागरूकता की कमी, अपर्याप्त ढांचा, पर्याप्त धन की कमी, सीमित शिक्षक प्रशिक्षण, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, पारंपरिक शिक्षा पर ध्यान, और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध शामिल हैं। इन चुनौतियों को दूर करने और ESD के प्रभावी क्रियान्वयन को बढ़ावा देने के लिए, सरकारी समर्थन, शिक्षा सुधार, समुदाय संलग्नता, और जन जागरूकता अभियानों को शामिल करने वाले एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारत में ESD का प्रचार सभी हितधारकों के सहयोग और भागीदारी की मांग करता है, जिसमें सरकार, शिक्षक, अभिभावक, और सामान्य जनता शामिल हैं। ESD को बढ़ावा देकर, भारत एक सतत, समतामूलक और समावेशी भविष्य बना सकता है। ESD समाज को अधिक पर्यावरणीय जागरूक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार बना सकता है, जो भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तैयार है। इसलिए, भारत में सभी के लिए एक सतत और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में ESD को प्राथमिकता देना अनिवार्य है।

References

Alexandar, R., & Poyyamoli, G. (2014). The effectiveness of environmental education for sustainable development based on active teaching and learning at high school level-a case study from Puducherry and Cuddalore regions, India. Journal of sustainability education, 7(1), 1-20.

Banga Chhokar, K. (2010). Higher education and curriculum innovation for sustainable development in India. International Journal of Sustainability in Higher Education, 11(2), 141-152.

Bangay, C. (2016). Protecting the future: The role of school education in sustainable development an Indian case study. International Journal of development education and global learning.

Fredriksson, U., N. Kusanagi, K., Gougoulakis, P., Matsuda, Y., & Kitamura, Y. (2020). A comparative study of curriculums for education for sustainable development (ESD) in Sweden and Japan. Sustainability, 12(3), 1123.

Little, A. W., & Green, A. (2009). Successful globalisation, education and sustainable development. International Journal of Educational Development, 29(2), 166-174.

Mohanty, A., & Dash, D. (2018). Education for sustainable development: A conceptual model of sustainable education for India. International journal of development and sustainability, 7(9), 2242-2255.

Mohanty, A., & Dash, D. (2018). Education for sustainable development: A conceptual model of sustainable education for India. International journal of development and sustainability, 7(9), 2242-2255.

Ravindranath, M. J. (2007). Environmental education in teacher education in India: experiences and challenges in the United Nation's Decade of Education for Sustainable Development. Journal of education for teaching, 33(2), 191-206.

Rudupra, Rokono. (2022). The Barriers To Achieving Education for Sustainable Development in Nagaland, India. International Journal of Advanced Research